विरति सतक

(रचयिताः--साकेतवासी स्वामी श्रीयुगलानन्य शरणजी महाराज)

दोहा—

श्री सीतावल्लभ विशद चरन हरन संदेह ।
ध्याय सुगुरु पद पंकरुह दायक दसा विदेह ॥
श्री वर विरति समेत जे सन्त अनन्द समान ।
बन्दों तिनके सुपदरज महा मोहतम भान ॥
विमल विराग विहीन सब साधन वृथा कलेश ।
ज्ञान ध्यान नाहक सुमन करो विचार विसेश ॥
अखिल भाँति आनन्द प्रद असद दमन निर्वेद ।
जेहि जिय जागे भाग वस समन करे कुल खेद ॥
ताको मरम सुभीन तर अतर तरावनहार ।
युगलानन्यशरण सुधी समझे कहाँ गँवार ॥
श्री प्रमोद निधि नाम गुन सुरति करावन हेतु ।
वरनो निज निर्वेद वर गाथ मोहनिधि सेतु ॥
श्री विराग दिलदाग द्रुत दाहक सुगुन अमोल ।
उर रंचक धारन किये रहे न चित्त विलोल ॥
पिता पुत्र संवादवर वरनो व्यास विचित्र ।
जेहि सुनि गुनि सिरधुनि न पुनि पावे ताप अमित्र ॥
जीवन उधारन काज सद साधन विविध विधान ।
श्रुति सुचि सत संवत तदपि समुझ विराग प्रधान॥
सो न होत निज मीच के चिंतन हीन निहारु ।
ताहि ते मृत्यु विचारिये पल प्रति हो हुशियारु ॥
नृपति युधिष्ठिर राजमनि एक समे युत नेह ।
पूछी प्रश्न पुनीत तर दलन हृदय सन्देह ॥
दीन दयाल कृपायतन विनय करौं करजोरि ।
मम इच्छा पूरन करो पुनि पुनि कहौं निहोरि ॥
आप पितामह निखिल गुन दिव्य धाम अभिराम ।
कहा कहौं महिमा सरस अरस समन दुति दाम ॥
कौन कलित कर्त्तव्यता बीते वैस विशेष ।
जाके किये न पाइये पुनि संसृति दुख रेख ॥
परम मनोहर बचन सुनि भीषम अधिक कृपाल ।
प्रिय बानी बोले तुरत नृप अति दमन दुशाल ॥
निखिल जीव अन्तर दया करन कदम्ब निरोध ।
नश्वर मति इत उत विभव बीच सजाय सुबोध ॥
खंडन खाहिस खलक को पलक पलक विच योग ।
युगल लोक शत शोक कर समुझै सहित कुरोग ॥
बापै एक पुरातनी कथा सकल मुद मूल ।
सुवन जनक संवाद सुचि समन सकल श्रम सूल ॥
मेधावी वर विरति युत जनक समीप सिधाय ।
प्रश्न करी इह भाँति से सुनो भूप चितलाय ॥
आयुर्बल पल पल विषे होत हीन दिन छीन ।
कहिये सबल उपाय प्रभु हरे दीनता दीन ॥
देह योग दुख सोगमय जामे होय न फेर ।
हे कृपाल कहिये सोई रंचक उचित न देर ॥
मेरे मन लागी लगन अगनन कैसेहु शांत ।
होत कहो सोई जतन नसे जौन विधि भ्रान्त ॥
पिता कह्यो प्रथमहिं करो वेदाध्येन सचाह ।
वलित ब्रह्मचर्यहिं सुवन सब विधि उचित विवाह ॥
अग्निहोत्र आदिक करम मख दक्षिण समेत ।
करिये विपिन गमन बहुरि संविहाय जगहेत ॥
या विधि बेद विधानमय जनक सुवाग उचारि ।
कियो मौन के भौन में तुरत प्रवेश विचारि ॥
अधिक खेद दायक बचन पोषन जगत प्रवृत्ति ।
सुनि न सुहान्यो तासु उर उरझे रहस निवृत्ति ॥

बोल्यो बचन बिचारि चित पिता पास कमनीय ।
जाके श्रवन मनन किये लगे न जग रमनीय ॥
वृथा विमल वैराग्य बिन देह गेह परिवार ।
वेद वाग पुष्पित सुमन गुनत उपाधि हजार ॥
सुनो सोच संकट समन बचन रचन निर्वेद ।
पिता सितासित कर्म सब बंधन रूप सखेद ॥
जरा मीच से ग्रसित तन पतन समेत हमेश ।
आधि व्याधि बहुधा वलित सपन न सुख लवलेश॥
ऐसी काया कामिनी चपल दामिनी भाँति ।
जानि बूझि थिर सम बचन वदत सुनत जियभ्रांति॥
मीच निवारन काज नहिं है उपाय कोउ तात ।
ताते केहि विधि परखिये जाल जटित सब गात ॥
रैन ऐन बीतत सदा होत उमर अति छीन ।
अल्प नीर मह मीन किमि धीर धरे दिल दीन ॥
जीवन की आयुष कहां गुरुतर जनक बिचारु ।
रवि रथ वेग बिशेष करि छन छन छीन निहारु ॥
चारो जुग मधि व्यथा इह साची सुचित सम्हारु ।
युगलानन्य शरण इदे विरति धारना धारु ॥
पल पल प्रति इह काल नित चलो जात जिय जानु।
आम कलश मधि जल यथा तथा साँच परमानु ॥
पीपर पत्र सुमध्य जिमि नीर न तिल थिर होत ।
याही विधि जीवनि कथा समुझो सुखद निसोत ॥
जीवन की आसा असत सत शरीर जगहान ।
ताही ते समुचित शतत सुमिरन कृपा निधान ॥
जन्मत ही संग मीच जन जरा लगी दृढ़ जानु ।
जुगल सबल संवलित इह जीव अतीव मलानु ॥
वित वपु गेहादिकन मधि सजे कौन विश्वास ।
को उत्साह विषय विषे धारे निरखि विनाश ॥
हाय हाय सबहीं करत भरत विनोद विकार ।
युगलानन्य न मीच की लखत निसित तरवार ॥
मीच कठिन निज भाल लखि भजो सिया रघुबीर ।
वृथा बितावो बैस मत असत साथ सहि पीर ॥

आगे की ईहा वृथा बालिस करत बिचार ।
को जाने कब मीच रिपु मारे तोहि गंवार ॥
वर्त्तमान् चित चेत करू परिहरु भावी व्यर्थ ।
युगलानन्य शरन सदा सुमिरो नाम समर्थ ॥
अनुछन जीवन के निकट गरजत काल प्रचंड ।
तथापि ममता मोह मधि मात्यो महा घमण्ड ॥
उठि उठि के निरखत नहीं किती अवस्था रैन ।
युगलानन्य शरन बिगत होश सजत सठ सैन ॥
मरन व्याध अतिशय सबल प्रबल अबल करि देत।
ताते गाफिलपन निदरि रे चित होहु सचेत ॥
ऐसो तीनो लोक में नजर न आवत कोय ।
जाको जनम जरा मरन ग्रसत न सब सुख खोय ॥
सुर नर मुनि याते डरत तूं कित अडर अचेत ।
आज काल मधि मारिहैं तोहि पाय खर खेत ॥
व्याधि मीच परखत नहीं औसर गनतन मूढ़ ।
याही हित जौ लौ सबल तौ लौ समुझ सुमूढ़ ॥
बाल अवस्था से भजो सिय जीवन तजि जाल ।
युगलानन्य शरण इहै सुबुधि रहस्य रसाल ॥
तरुन अवस्था तम भरी तरुनी रुचत बिशेष ।
वृद्ध भये सब वपु सिथिल भरयो राग अरु द्वेष ॥
प्रथमहिं से अभ्यास सजु जीवन होय न होय ।
युगलानन्य शरण सुबुधि बूझो बैन निकोय ॥
बहा जात दरयाव इह तू भी कर निज धोय ।
विमल होय रहिये इदे बिबिध वासना खोय ॥
स्वांस स्वांस सुमिरन सजो लजो न नेक जहान ।
युगलानन्य शरन छजो हर हमेश सम भान ॥
जिमि फल पाके पर पवन डारत भूमि मझार ।
तिमि आयुष नर छीन लखि मारत मीच प्रचार ॥
बाल जुवा अरु जठरपन वृथा बकत बिन बोध ।
अंतक के कनियाँ विषे खेलत बिगत निरोध ॥

(क्रमशः)

त्रिविध बासना ईषना निरखि निरस सठ त्यागु।
श्रीजानकि बल्लभ सुपद पंकज सनु अनुराग ॥५८॥
सरित श्रोत सम स्वास सठ चलो जात बिन काज।
बहुरि न इत आवत कबहुं अनुपम रतन समाज॥५९
निश दिन दाई गोद में क्रीडत बाल समान।
मीच नीच खैहैं अवस ह्वै चेतन रख प्रान ॥६०॥
रैन ऐन छन मास रख घड़ी मुहूरत काल।
पीड़हिं शंतत तोहि जिमि बृद्ध बृद्धता साल ॥६१॥
जिमि दृढ़ सदन पुरान पर परत न लागत बार।
तैसेहिं कालागमन लखि मरत जीव लाचार ॥६२॥
संशय शोक समुद में बूड़ि रहे जड़ जीव।
युगलानन्यशरण सदा भूले मोद अतीव ॥६३॥
जौन दिवस निशि मे मधुर रट्यो न सीताराम।
है सो बांझ समान दिन दायक शोक निकाम॥६४॥
मम सुत मम पितु मम सदन मम दारा मम देह।
ऐसहिं मैंमें करत नर मरत सरत पशु खेह ॥६५॥
अजा समान अजान जड़ जीवन जान विनास।
करवावत मे मैं करत चरत विषय घन घास ॥६६॥
अजर अमर सम आपको मानत नीच अजान।
छन भंगुर वपु नहिं लखत भूलि रह्यो कुल कान॥६७
याही पल जेहि हम लख्यो सब बिधि पुष्ट शरीर।
सो अंतक कर बस पर्यो हा किमि धारिय धीर॥६८

दस दिसि हाहाकार नित सुनियत तदपि न चेत।
तन जीरन तृष्णा अमित भये केश सब सेत ॥६९॥
जीवन ताको है सफल सब प्रकार कमनीय।
जाके मुख हिय नित लसे नाम रूप रमनीय ॥७०॥
मृग तृश्ना के सरित सम समुझो सकल जहान।
दूर देस देखत सुषद निकट गये हिय हान ॥७१॥
रिधिसिधि संपति बिफलसब सफल अमर बपुपाय।
ताही ते भूपति वृथा वैस न रंच नसाय ॥७२॥
सहस कृशानु समान लखु ललित ललाई लोक।
पुगलानन्यशरण शतत सौंपत शतगुन शोक ॥७३॥
होय हमेश एकान्त में करिये दिव्य बिचार।
युगलानन्य समूह सुख संसारी सम दार ॥७ ॥
बिमल विराग सराग धरु परिहरु असद मिलाप।
युगलानन्यशरन अवस मिटे तीन तन ताप ॥७५॥
जागत रहो गहो सुमति सुमिरन विरति सुडोरि।
युगलानन्य अयास बिन मिले सुजीवन जोरि ॥७६॥
इत उत झख मारत वृथा फांकत खाक मसान।
युगलानन्यशरन न मन भजन जानकी जान ॥७७॥
लखि न परे कौनी समे ग्रसे मीच वपु आय।
ताते प्रथम सम्हारिये शरन सबल रघुराय ॥७८॥
जीवन सब मरनांत लखु जोवन झलक जरांत।
संपति सकल विनाश पर धीर धरिय केहि भाँत७९
काल संग जेहि सख्यता सांच अमर जो होय।
ताही को कहनो फबत भोर सांझ टक टोय ॥८०॥
प्रात साँझ की को कहे पल अंतर कछु और।
ताही ते तत छन करो भजन सुकृत सजि गौर॥८१॥
इह कारज हम कर चुके अब करिहौं कुछ और।
ऐसहिं चिंता जाल मधि बंध्यो दशहु दिशि दौर॥८२
हाय न सूझत अंध दृग धृग अनुपम वपु पाय।
छन भंगुर जानत नहीं दुख निधि गोता खाय ॥८३।
महा अमोलक लाल लहि वृथा बहावत मन्द।
युगलानन्यशरन महा मलिन न मानत पन्द ॥८४॥
कोटिन कठिन कलेश सठ सहत सुता सुत संग।
कठिन एक सी भामिनी भोग गुनत रस रंग ॥८४॥
वामा बाम विकार बन सघन मांझ मुद मानि।
विहरत अंतक केहरी काम त्रास तजि हानि ॥८६॥
सब कुटुम्ब झूठे दगाबाज राज ठग भूप।
कोटि कसाई से सरस पतन करत तम कूप ॥८७॥
मधुर मनोहर बचन कहि हरहिं हीय सनमानि।
अंतर छल छाई छुरी दुरी करावनि हानि ।८८॥
मन माया दोऊ मिले मोह महीप कठोर।
युगलानन्य सुबित्त कहँ नित लूटत वर जोर॥८९॥
छोड़ि छलीन कुसंग को सन्त संग लय लाव।
युगलानन्यशरन अवस दुरे दोष दिल दाव ॥९०॥
इनसे क्या हासिल तुझे समुझ सु टुक नादान।
कोटिन कल्पन से भई सब बिधि इन संग हान ॥९१
राज साज संसृति सहित जानत जगत समाज।
जनक कौन हिय हरष को कारन दरद दराज ॥९२॥
वृथा बड़ाई बिश्व की बनी न जो बर बात।
युगलानन्यशरन शतत सनु सुमिरन कुशलात ॥९३।
तन मन धन आशक्त रहि भूल्यो काल कराल।
बन पसु सम हरि विवस ह्वै नाश होत ततकाल॥९४
सदा संत सिषवें सुवच साहेब शरन सम्हारु।
आखिर हाय हजार तोहिं रहे न बिश्व विहारु॥९५
दगा दम्भ कीन्हें कहा लाह दाह हर रोज।
युगलानन्यशरण अधम क्यों न करत प्रभु खोज॥९६
चतुराई सीषत विविधि बिश्व रिझावन काज।
केवल आदिहुँ अंत मधि तेरोइ अधिक अकाज॥९७

(क्रमशः)

सावधान हूजे जलद जलद मनोहर गात ।
पद पंकज सुमिरन सजो तजो कुरंजन बात ॥
काल कराल गरज सुनो गुनो धुनो निज माथ ।
युगलानन्य सचेति चित हुनो हिरस भ्रम साथ ॥
जेहि अनुरागी सुजन जिय जोहत काल समीप ।
अशन सैन बोलन बिसरि जात तिन्हें दोउ दीप ॥
नेह फांस दुर्बासना बांध्यों जीव अचेत ।
जहँ तहँ घूमत ही रहत गहत न थिरता केत ॥
जैसे वारू सेतु दृढ़ थिर न रहत कोउ भांति ।
तैसे ही जग नात सुख राज समुझु तजि भ्रांति ॥
शत सहस्र युग कल्प लगि जिये तऊ सिर काल ।
सभय बसत विधिहूँ भवन अपर जीव क्या माल ॥
द्वै दश पांच बरस अरस बीच पचीस पचास ।
शत प्रयंत ते अधिक नहिं कलि आयुर्बल आस ॥
ता मधि नाना बासना करत कलंक निकेत ।
वित विद्या जस हेत सठ पचत न अंतक चेत ॥
संपति सुख सम सपन लखु जोवन सुमन समान ।
आयुर्बल तुल चंचला चपल न धीरज आन ॥
कहा काज जग साज से ग्रसे मोहि इह मीच ।
अध्रुव देह दृढ़ जानि के मन न लगे कोइ बीच ॥
भव निधि भँवर भयान जहँ उठत विकार तरंग ।
अवलंबन रंचक न तहँ भ्रमत खेद सब अङ्ग ॥
ऐसो अगम समुन्द मधि केवल कोशल पाल ।
कृपा पोत वर विरति युत पार करत ततकाल ॥
करिहौं जतन जमात जेहि मिले अमित धन नीक ।
मानादिक अभिलाष करि सहत कुसंकट फीक ॥
रोयो जनम कदंब तउ शरम न रंचक होत ।
युगलानन्य अभाग निधि किमिलहे विरति उद्योत ॥
उत्कंठा या विधि उचित हौं केवल संगहीन ।
काहू साथ न कैसेहुँ मम सम्बन्ध प्रवीन ॥
आवत संग न जात कोउ कहु नाता केहि भाँति ।
मध्य मोह मधु स्वाद हित माखिन सम उरझात ॥
सुकृत कुकृत संगी सही ताते अघहिं त्यागि ।
संत संग सजि सुकृति लहि रहु प्रभु पद पनपागि ॥
कर्म काल गुन प्रमुख कोउ भोगत भूलि न खेद ।
केवल जीवहिं भाल जम कूटहिं वदहिं सु वेद ॥
गनिका पर वामा वदन दोष सदन सब भांति ।
तिन सन साजत शोक सठ हठ वस अधम अशांति ॥
भूल्यो रहे सहे अमित ताप कलंक कलाप ।
भूल्यो भूला खेद निधि तउ पुनि चाह मिलाप ॥
मही काढ़ पंखान से तुच्छ तोहि अनुमानि ।
कहु दहाय ऐहैं सदन महामोद मन मानि ॥
तिनहिं लागि सियराम सत गुरु सन तोरत नात ।
युगलानन्य कुचाल रत पावत दुख जम जात ॥
या तन हित बहुधा जतन वसन विभूषन भोग ।
वृथा चाँदनी चार दिन फेर अंधेरा सोग ॥
बली काल हरि विश्व बन विचरत गरजि कठोर ।
जरा राछ सीसा थलै तदपि न डरपत थोर ॥
केते दिन लगि करहुगे इन संग भोग विलास ।
आखिर खल खल राखिया खतरा निरय निवास ॥
कौन कुशल ठग नगर में केवल निज धन हान ।
ताते सजग सदा रहो बहो न विषम बहान ॥
जौ लौं रोग कराल अरु ग्रस्यो न जरा कराल ।
तौ लौं मौज महान मुद लीजे ललित रसाल ॥
जीरन वन गज पंक सर फंसे न निकरत तात ।
तैसे भ्रम मधि फँदि अधम आयुष सरस सिरात ॥

लोह दारु दृढ़ पास से बंधे कबहुँ छुटि जाय ।
सुवन वाम मय फांस से बंध्यो न निकसत हाय ॥
सम्बन्धिन मधि सपनेहुँ करब न मति यहि भाँति ।
मेरे बिन अतिशय कृपिनि केहि विधि पावें शांति ॥
वीज विन्दु चेतन रहित तेहि कारज जड़ देह ।
तामधि जीव प्रवेश करि पायो खेद सु गेह ॥
गर्भ मांझ तेरो कवन पोख्यो बपुष अजान ।
जठरानल के ताप से बचवायो नादान ॥
जो तोहि पाल्यो उदर मधि सविधि चेत तेहि अंध।
युगलानन्य शरन वृथा वंधत मोहमय फन्द ॥
सदा सोई प्रतिपाल कर करुनाकर रघुबीर ।
युगलानन्य शरन भये हरें हजारन पीर ॥
ताते चिंता तरक करु परिहरु उदर गलानि ।
दृढ़ विश्वास सजाय जिय भजिये रित व्रत वानि ॥
स्वयं मूढ़ मृत पिंड सम पराधीन सब काल ।
निज रच्छन असमर्थ सठ चाह अपर प्रतिपाल ॥
निज कृत ते उद्भव सकल बढ़त तैसेहीं मीत ।
सुख दुख मीचहु कर्म वश पावत शतत विनीत ॥
को हम कहँ मेरो सदन गमन कवन पुनि देश ।
का सन मम सम्बन्ध वर सुमिरु सुचित्त विसेश ॥
तेरो बन्धु न मीत कोउ तूँ काहू को नाहि ।
पथिक संग करि रंग गुनि बृथा फजीहत आहि ॥
प्रथम सनेही शत्रु पुनि मीत होत रिपु भाँति ।
विविधि भांति वपु योग युत गहत न रंचक शांति ॥
जननी जनक सुता सुवन याही विधि विपरीत ।
युगलानन्य जहान को नाता असत सभीत ॥
वार वार तो सों कहें श्री श्रति सन्त सुजान ।
महा मोह मदिरा पिये करत न तूँ तिल कान ॥
पांचो तत्त्व दिवेश शशि मेह विविध विधि भोग ।
केवल तब हित तूँ बन्यो प्रभु कारन तजु शोग ॥
ऐसे दीनानाथ गुन नाम शरन सठ त्यागि ।
पचत प्रबल पावक प्रलय जगत जाल पन पागि ॥

मोह एक कारन समुझ बंधन वीच न आन ।
चौरासी लख योनि को जानो ताहि निदान ॥
कोश कार सम आपही बंध्यो बिना वर बोध ।
युगलानन्य शरन भजन कीजे कतहुँ अयोध ॥
सदन दहन से दहत तकि कौन धरे धिय धीर ।
ऐसे ही सब काल वश अग जग पावत पीर ॥
निज स्वरूप अनुमान करु सुनि सदगुरु वर वैन ।
विमल विराग अदाग धरु उर अन्तर दिन रैन ॥
नित्यानन्द अखण्ड रस दायक पुर विश्राम ।
नाम रूप मन मनन नित कीजे हृदे अकाम ॥
पंडित मूढ़ सुरंक नृप सब मधि मीच समान ।
ताते विषय विलास सुष है केवल दुख खान ॥
वली विशेष भये विपुल जीते भुवन अनेक ।
काल कलेऊ अन्त में भये विहाय सु टेक ॥
अनुदिन काल कराल की गरज सुनत विकराल ।
तऊ रमत जे जगत मधि ते साहसी विशाल ॥
जो कछु निरखिय नित नयन सो अनित्य शकहीन ।
याते विगत प्रपंच है होहु राम रस मीन ॥
निखिलारम्भ सदंभ गुनु सुनु श्री संत सुवैन ।
महा जाल जग जाल लखु हरन चारुचित चैन ॥
निरावरन निर्वेद गुन धारि आपने हीय ।
आठो जाम अकाम मन जपिहौं श्री सिय पीय ॥
जनक आपकी कृपा बल समुझ पर्‌यो वर बोध ।
रह्यो न रञ्चक चित्त विच जग कृत विविधि विरोध ॥
प्रथम विजय करि करन गन मन समेत युत मोद ।
विशद विराग अदाग गहि रहिहौं सहित विनोद ॥
जौ लौं देह रहे अधम सबल देव आधीन ।
तौ लौं मन षट् पद सदृश करिहौं प्रभु पद लीन ॥
खुल्यो कपाट सुमुक्ति निज चिंतन मीच स्वरूप ।
तदपि न चेतत मन्द मति पड़त विषम तम कूप ॥
कथनी विविध बनाय के कथत मूढ़ बिन लाज ।
युगलानन्य विराग विनु बृथा बतकही साज ॥

श्री शुकदेवादिकन को है सुचि सम्वत स्वच्छ ।
युगलानन्य शरन विषय विरहित होत सुलच्छ ॥
जेहि ढूंढ़त अज प्रमुख सुर सुरपति नृप वड़भाग ।
ऐसो चिंतामनि तजे सो सब विधि हतभाग ॥
भाग विराग समान नहिं समुझो सुमति सुजान ।
योग ज्ञान साधन सकल रहित स्वांग अनुमान ॥
अंतराय समुदाय को करत सुवेगि विनाश ।
देत बढ़ाय सनेह अति साजत हृदे हुलास ॥
सुखद सोहावन सुत वचन सुनि पितु हित निज जानि
कीन्हों अंगीकार तिमि पायो प्रमुद प्रमानि ॥
सबसे चित्त विरक्त करि पाय परम निधि बोध ।
युगलानन्य शरन उभय पाई गति अविरोध ॥
वेद पुरान सु संहिता आगम सत सिद्धान्त ।
जगत तजे बिन जीव की मिटे न कबहूँ भ्रान्त ॥
अजपा नित निर्वेद को रहिये करत बिचार ।
लहिये श्री पर पद असद दमन विहाय विकार ॥
श्री भीषम वर वैन सुनि पंडु सुवन मन मोद ।
पायो बिविधि प्रसंशि गुन धार्‌यो विरति विनोद ॥
युगलानन्य शरन विरति शतक विरचि रुचि साथ ।
श्री कामद गिरिराज कल निकट जपत रघुनाथ ॥

विरति शतक दोहा कलित शत पैसठ छवि खान ।
युगलानन्य शरन हृदे धारत संत सुजान ॥१६८॥

❀ इति विरति शतक सम्पूर्णम् ❀

झूलन पद

झमकि झुकि झूलैं सिया रघुबीर ।
कुंज पुंज द्रुम लता मनोहर श्री सरयू के तीर ॥
दामिनि दमक चहूँदिशि दमकत बरसत पावस नीर ।
चन्द्रकला बिमलादि झुलावत उड़त सिया को चीर ॥
देखत सोभा अनुपम-बांकी मिटत हिया को पीर ।
'मधुर' सनेह सरस सुख उपजत नैना होत अधीर ॥

पं० भानुदत्त त्रिपाठी "मधुर"